डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक : 10.08.20

पत्र/अष्टम :- साहित्य सिद्धांत और हिन्दी आलोचना

अलंकार

(7) अतिशयोक्ति अलंकार : अतिशय + उक्ति
(अतिशय ⇓ बढ़ा-चढ़ाकर; उक्ति ⇓ कथन)

अर्थात जहाँ किसी बात का वर्णन काफी बढ़ा-चढ़ा के किया जाय, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

जैसे – आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार"

उक्त पंक्तियों में महाराणा प्रताप के घोड़ा (चेतक) की शक्ति और स्फूर्ति को काफी बढ़ा-चढ़ा कर बताया गया है।

(8) मालोपमा : यदि एक वस्तु की अनेक वस्तुओं से उपमा दी जाएँ तो वहाँ 'मालोपमा' अलंकार होती है। मालोपमा = माला + उपमा अर्थात जहाँ उपमा की माला ही बन जाए यानि, उपमा की संख्या अधिक हो। विश्वनाथ कहते हैं :—

"मालोपमा यदेकस्योपमानं बहु दृश्यते – विश्वनाथ (साहित्यदर्पण)

उदाहरण :—

सिंहनी-सी काननों में, योगिनी-सी शैलों में,
शफरी-सी जल में, विहंगिनी-सी व्योम में,
जाती अभी और उन्हें खोजकर लाती मैं।
(मैथिलीशरण गुप्त)

~~यह सभी उपमा~~ एक यशोधरा के लिए – चार उपमान प्रस्तुत किए गए हैं। अतः यहाँ 'मालोपमा' अलंकार है।

(9) अनन्वय : एक ही वस्तु को उपमेय और उपमान – दोनों बना देना 'अनन्वय' अलंकार कहलाता है।

काव्यालंकार- सूत्र में वामन कहते हैं:—

"एकस्योपमेयोपमानत्वेऽनन्वयः"

जब कवि को उपमेय की समता के लिए कोई दूसरा उपमान नहीं मिलता तब वह उपमेय की समता के लिए उपमेय को ही उपमान बना डालता है। उदाहरण:—

"निरुपम न उपमा आन राम समानु राम, निगम कहै।
-तुलसीदास

यहाँ, 'राम समानु राम' में उपमेय - उपमान एक ही रहने के कारण अनन्वय अलंकार है।

(10) प्रतीप :- प्रसिद्ध उपमान को उपमेय बना देना 'प्रतीप' अलंकार कहलाता है। 'प्रतीप' का अर्थ ही 'उल्टा' होता है। मुख के लिए प्रसिद्ध उपमान चाँद है। यदि चाँद को ही उपमेय बनाकर मुख से समता दिखाई जाय, तो प्रतीप अलंकार होगा। उदाहरण-

"बिदा किये बहु विनय करि, फिरे पाइ मनकाम।
उतरि नहाये जमुन-जल, जो सरीर सम स्याम।।"
(तुलसीदास)

श्यामल शरीर की उपमा यमुना के नीले जल से दी जाती रही है, किन्तु यहाँ श्रीराम के श्यामल शरीर की तरह यमुना का जल बताया गया है, इसलिए यहाँ 'प्रतीप' अलंकार है।

(11) संदेह अलंकार :- प्रकृत में अप्रकृत के संशय को संदेह कहते हैं। आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण में कहते हैं—
"प्रकृतेऽन्यस्य संशयः प्रतिभोत्थितः।" समता के कारण दो वस्तुओं में यह है अथवा वह है का जहाँ निर्णय नहीं हो, वहाँ चामत्कारिक वर्णन रहने पर 'संदेह' अलंकार होता है। उदाहरण:—

"काजल के कूट पर दीपशिखा सोती है,
श्याम घनमंडल में दामिनी की धारा है।
यामिनी के अंचल में कलाधर की कोर है कि,
राहु के कबंध पै कराल केतु तारा है।
शंकर कसौटी पर कंचन की लीक है कि,
तेज के तिमिर के हिये में तीर मारा है।
काली पाटियों के बीच मोहिनी की माँग है कि,
ढाल पर खाँडा कामदेव की दुधारा है।
—(शंकर)

यहाँ, सुंदरी की माँग के सदृश्य अन्य वस्तुओं को देखकर निर्णय न हो पाने में 'संदेह' अलंकार है।